Vol 6 Issue 12 Sept 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

कृषि विकास एवं सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन : सीकर जिले का अध्ययन

डॉ. श्यामसुन्दर वर्मा
व्याख्याता. भूगोल, श्री डुंगरगड महाविद्यालय, श्री डुंगरगड.

प्रस्तावना :–

भूमि को जोतने, फसल को उगाने और काटने, पशुओं को पालने और पशुधन को बढ़ाने के विज्ञान अथवा कला को कृषि के नाम से जाना जाता है। विस्तृत आधुनिक अर्थों में, 'कृषि' में मानव के लिये लाभदायक पौधों को उगाना और पशुओं को पालना आता है, अपितु इनके विपणन से सम्बन्धित कई प्रक्रियाएं भी इसमें सम्मिलित की जाती है।

इतिहास के आरम्भिक काल मे मानव ने शनैःशनैः विकास किया क्योंकि उसके इर्दगिर्द का वातावरण नितान्त वनाच्छादित और जटिल था। मानव भी तकनीकी एवं भौतिक साधनों से इतना अधिक सक्षम नहीं था कि सरलता से वातावरण के प्रति समायोजन कर सके। वस्तुतः आदिकालीन मानव कंदमूल फल आदि के संग्रहण और मोटे अनाजों का उत्पन्न कर तथा मांस हेतु पशु–पक्षियों के शिकार, मछली आदि पकड़ने जैसी क्रियाओं द्वारा उदरपूर्ति करता था। अतएव पेड़–पौधों को रोपने, उपजाने आदि क्रियाओं से पूर्व मानव इन्हें उखेलने काटने आदि जैसी क्रियाओं में अभयस्त था।

कृषि का उद्भव व विकास कब और कैसे हुआ, यह आजकल अनुसंधान व शोध का रोचक विषय है। इस विषय में कोई सरल मत नहीं है, परन्तु परम्परानुसार कृषि की उत्पत्ति क्रांतिकारी घटना है। पुरातात्विक स्थलों में उपलब्ध प्रमाण यह सिद्ध करते हैं कि कृषि का विस्तार व विकास क्रमिक रूप से घटित एक प्रक्रिया है। वस्तुतः अनेक पौधों को और पशुओं को विभिन्न कालों में अनेक स्थानों पर उपजाया और पाला जाता रहा है। मानव इतिहास के आरम्भ में दीर्घकाल तक कंदमूल खाद्य–वनस्पति संग्रहण और पशुओं का शिकार प्रभावी क्रियाएं रहीं है। आज भी विश्व की अनेक आदिकालीन जन–जातियां इन क्रियाओं में लीन है। नियंडरी मानुषों ;भ्वउवदपकेद्ध और उनके वानरनुमा पूर्वज के भोजन का स्त्रोत स्थानीय वन ही थे। इसकी पुष्टि पुरा, मध्य एवं नव–पाषाण कालों के प्राचीन स्थलों की खुदाइयों द्वारा हो चुकी है।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन में सीकर जिलें में कृषि विकास एवं सामाजिक आर्थिक परिवर्तन को ज्ञात करना है। जिसके माध्यम से कृषि योजना निर्माताओं, प्रशासकों एवं अन्य संबंधित व्यक्तियों के जो जिले के कृषि विकास योजनाओं में संलग्न है, लाभान्वित होकर कृषि विकास के लिए उचित योजना का निर्धारण कर सकें व सामाजिक आर्थिक परिवर्तन से परिचित हो सके। इसके अतिरिक्त इस अध्ययन में यह भी ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि कृषि विकास व सामाजिक आर्थिक परिवर्तन के लिए क्या–क्या नये संसाधन जुटाने के प्रयास किये गये है। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन के निम्न उद्देश्य तय किए गए।

1. कृषि विकास व सामाजिक आर्थिक परिवर्तन के लिए उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं का सामाजिक–आर्थिक एवं क्षेत्रीय आंकलन करना।
2. कृषि में प्रयुक्त किये जा रहे कृषि विकास के तकनीक, रासायनिक और जैविक आदानों का क्षेत्रीय वितरण आदि का विश्लेषण करना।
3. कृषि विकास में आने वाली सामाजिक–आर्थिक बाधाओं को ज्ञात करना व उनके निराकरण हेतु सुझाव देना।
4. कृषि विकास एवं सामाजिक आर्थिक परिवर्तन के स्तर को ज्ञात करना।
5. सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन की प्रवृति का विश्लेषण करना।
6. कृषि एवं सामाजिक आर्थिक विकास के भावी विस्तार हेतु रचनात्मक सुझाव देना।

विधि तंत्र :

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से निम्न विधियों के माध्यम से पूर्ण किया गया–

1. द्वितीयक आंकडों में उपलब्ध विषय सामग्री, सांख्यिकीय आंकड़ों की सहायता से।
2. कृषि विकास व सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के प्राथमिक आंकड़े एकत्रित करने के पश्चात प्रत्येक तहसील से 2 गांवों का चयन करते हुए प्रश्नावली के माध्यम से कृषि विकास की समस्या आदि से संबंधित प्राथमिक आंकड़ो का संकलन किया गया। प्रत्येक गांव से 20 प्रतिशत परिवारों का सर्वेक्षण प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। इस प्रकार कुल 09 तहसीलों से 18 गांवों का सर्वेक्षण किया गया। गांवों का चयन का आधार एक छोटा एवं एक बडा गांव रखा गया था।
3. प्राथमिक एवं द्वितीय आंकड़ों का तालिकाओं, मानचित्रों व सांख्यिकीय विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के लिए विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया।

सर्वेक्षित गाँवों का सामान्य परिचय :

सीकर जिले में कृषि विकास एवं सामाजिक परिवर्तन के स्तर के मापन हेतु जिले की प्रत्येक तहसील से दो गाँवों का चयन किया गया है। चयन का आधार गाँवों की तहसील मुख्यालय से दूरी को माना जाता है। सर्वेक्षित गाँवों की सूची निम्न है–

सारणीं संख्या–40 : सर्वेक्षित गाँवों की सूची

क्र.स.	तहसील	गाँव का नाम
1	फतेहपुर	1. खोटिया
		2. श्रोलसाबसर
2	लक्ष्मणगढ़	1. कन्टेवा
		2. हमरपूरा
3	सीकर	1. बेरी
		2. ढाडिया
4	श्रीमाधोपुर	1. पीपलिया
		2. बागड़िया बास
5	दातारामगढ़	1. खुड़
		2. बानूड़ा
6	नीमकाथाना	1. ढ़ाणी चन्देलिया
		2. कुरवारा
7	धोद	1. कुन्दन
		2. माडोला
8	खण्डेला	1. गुरारा
		2. केटड़ी
9	रामगढ़ शेखावाटी	1. नेठवा
		2. बवाला

स्त्रोत– फील्ड सर्वेक्षण

सामाजिक संरचना :

क्षेत्र विशेष की सामाजिक संरचना से वहां निवासित जनसंख्या का बोध होता है। सीकर जिले के सर्वेक्षित गांवों का विस्तृत विवरण सारणीं संख्या 41 में दिखाया गया है। समस्त तहसीलों के सर्वेक्षित गावों में 51.96 प्रतिशत पुरुष एवं 48.04 प्रतिशत महिलायें हैं। इससे स्पष्ट है कि आज भी पुरुषों की तुलना में महिलाओं का प्रतिशत कम है जो काफी चिन्ताजनक विषय है। सीकर जिले में सर्वाधिक पुरुष 53.85 प्रतिशत फतेहपुर तहसील व सबसे कम 50.48 श्रीमाधोपुर तहसील में है एवं सबसे कम 46.15 प्रतिशत फतेहपुर तहसील में है। वर्तमान समय को देखते हुए ये औसत काफी अच्छा नहीं है। इस स्थिति के अनुसार हम कह सकते हैं कि इस क्षेत्र में आज भी विभिन्न सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों की पहुंच नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला–पुरुष अनुपात के प्रति लोग जागरूक नहीं हैं।

 VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

सारणीं संख्या–41: सामाजिक संरचना						
तहसील	कुल परिवार	पुरुष	प्रतिशत	महिलायें	प्रतिशत	योग
फतेहपुर	50	210	53ण85	180	46ण15	390
लक्ष्मणगढ़	50	218	53ण17	192	46ण83	410
सीकर	50	208	52ण66	187	47ण34	395
श्रीमाधोपुर	50	210	50ण48	206	49ण52	416
दातारामगढ़	50	203	51ण01	195	48ण99	398
नीम का थाना	50	240	51ण61	225	48ण39	465
धोद	50	197	51ण17	188	48ण83	385
खण्डेला	50	216	52ण68	194	47ण32	410
रामगढ़ शेखावाटी	50	201	51ण15	192	48ण85	393

स्त्रोत– फील्ड सर्वेक्षण

व्यावसायिक स्तर :

किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या के व्यावसायिक स्तर में संलग्न संख्या से क्षेत्र की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का बोध होता है। सीकर जिले में सर्वेक्षित 18 गांवों का विवरण सारणीं संख्या 43 में दर्शाया गया है। सभी तहसीलों के सर्वेक्षित गांवों में 13.77 प्रतिशत व्यक्ति सरकारी सेवा में, 14.66 प्रतिशत व्यक्ति निजी सेवा में तथा 71.53 प्रतिशत व्यक्ति कृषि कार्य में संलग्न हैं। इससे स्पष्ट होता है कि गांवों में अभी भी सरकारी एवं गैर सरकारी सेवा का प्रतिशत काफी कम है। इस कारण कृषि के आधुनिकीकरण पर अत्यधिक जोर देकर कृषि उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। जिससे न्यूनतम लागत पर अधिकतम पैदावार ले सकते हैं। राजकीय सेवा में सबसे अधिक व्यक्ति सीकर तहसील में (32.00 प्रतिशत) व्यक्ति कार्यरत हैं एवं सबसे कम व्यक्ति फतेहपुर में कार्यरत हैं। इसी प्रकार कृषि कार्य में दातारामगढ़ में सबसे अधिक 80 प्रतिशत एवं खण्डेला व सीकर में सबसे कम 60 प्रतिशत व्यक्ति कृषि कार्य में संलग्न हैं।

सारणीं संख्या–43 : व्यावसायिक स्तर

सारणीं संख्या–43 : व्यावसायिक स्तर							
तहसील	व्यावसायिक स्तर (संख्या						
	राजकीय सेवारत	प्रतिशत	निजी सेवारत	प्रतिशत	केवल कृषि	प्रतिशत	योग
फतेहपुर	02	4.00	10	20.00	38	76.00	50
लक्ष्मणगढ़	06	12.00	07	14.00	37	74.00	50
सीकर	16	32.00	04	8.00	30	60.00	50
श्रीमाधोपुर	05	10.00	07	14.00	38	76.00	50
दातारामगढ़	06	12.00	04	8.00	40	80.00	50
नीम का थाना	03	6.00	08	16.00	39	78.00	50
धोद	08	16.00	10	20.00	32	64.00	50
खण्डेला	10	20.00	10	20.00	30	60.00	50
रामगढ़	06	12.00	06	12.00	38	76.00	50

स्त्रोत– फील्ड सर्वेक्षण

कृषि भूमि का स्वरूप :

कृषि भूमि के स्वरूप से हम पता लगा सकते हैं कि किसी क्षेत्र विशेष में किस प्रकार की भूमि स्थित है। भूमि कृषि के योग्य है या नहीं अन्यथा ऐसी भूमि है जो बिलकुल बंजर है। सीकर जिले में अगर देखा जाए तो कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत अधिक है जो कृषि के लिए अच्छी खबर है। सर्वेक्षित 18 गांवों का कृषि भूमि स्परूप सारणीं संख्या 46 में दर्शाया गया है। समस्त तहसीलों के सर्वेक्षित गांवों में कृषि योग्य भूमि का प्रतिशत 78.88 प्रतिशत है। वहीं कृषि अयोग्य भूमि का प्रतिशत 16. 22 प्रतिशत है एवं बंजर भूमि की प्रतिशत 4.88 प्रतिशत है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सीकर जिले में कृषि योग्य भूमि की अधिकता है। सीकर जिले में सर्वाधिक कृषि योग्य भूमि सीकर तहसील में 84.00 प्रतिशत है वहीं सबसे कम कृषि योग्य

भूमि नीम का थाना में 74.00 प्रतिशत है। वहीं अगर कृषि अयोग्य भूमि की बात की जाये तो सीकर जिले में श्रीमाधोपुर तहसील में सर्वाधिक 20.00 प्रतिशत कृषि अयोग्य भूमि पायी जाती है। इसके अतिरिक्त सीकर जिले में बंजर भूमि का प्रतिशत 4.88 प्रतिशत है। सीकर जिले में सर्वाधिक बंजर भूमि नीम का थाना तहसील में 12.00 प्रतिशत है। अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सीकर जिले में कृषि योग्य भूमि काफी अधिक है जिस पर काफी मात्रा में कृषि कार्य किया जा सकता है।

सारणीं संख्या–46 :कृषि भूमि का स्वरूप

तहसील	भूमि स्वरूप						
	कृषि योग्य	प्रतिशत	कृषि अयोग्य	प्रतिशत	बंजर भूमि	प्रतिशत	योग
फतेहपुर	40	80.00	08	16.00	02	4.00	50
लक्ष्मणगढ़	38	76.00	10	20.00	02	4.00	50
सीकर	42	84.00	07	14.00	01	2.00	50
श्रीमाधोपुर	38	76.00	10	20.00	02	4.00	50
दातारामगढ़	39	78.00	10	20.00	01	2.00	50
नीम का थाना	37	74.00	07	14.00	06	1.00	50
धोद	42	84.00	05	10.00	03	6.00	50
खण्डेला	41	82.00	06	12.00	03	6.00	50
रामगढ़	38	76.00	10	20.00	02	4.00	50

स्त्रोत– फील्ड सर्वेक्षण

ग्राफ संख्या :– 1 कृषि भूमि का स्वरूप

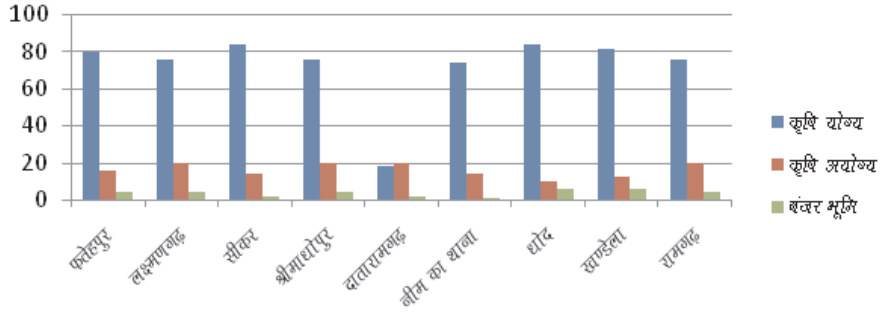

कृषि भूमि का उपयोगी प्रतिरूप :

कृषि भूमि का उपयोगी प्रतिरूप से आशय किसी क्षेत्र विशेष में कैसी भूमि उपलब्ध है। जैसे – सिंचित, असिंचित, रेतीली आदि। सीकर जिले में कृषि भूमि के समस्त उपयोगी प्रतिरूप देखने को मिलते हैं। सीकर जिले के सर्वेक्षित 18 गांवों का कृषि भूमि उपयोगी प्रतिरूप सारणीं संख्या 49 में दर्शाया गया है। सीकर जिले में सिंचित भूमि का प्रतिशत 36.88 प्रतिशत है। सीकर जिले में सर्वाधिक सिंचित भूमि खण्डेला तहसील में 52.00 प्रतिशत है। वहीं न्यूनतम सिंचित भूमि रामगढ़ तहसील में 16.00 प्रतिशत हैं सीकर जिले में सर्वाधिक असिंचित भूमि रामगढ़ तहसील में 60.00 प्रतिशत है एवं सीकर जिले में न्यूनतम असिंचित भूमि सीकर तहसील में 10.00 प्रतिशत है। वहीं सीकर जिले में बारानी भूमि का प्रतिशत 7.55 है। सीकर जिले में सर्वाधिक बारानी भूमि श्रीमाधोपुर तहसील में पाई जाती है। सीकर जिले में परती भूमि का प्रतिशत 10.88 है। सीकर जिले जिले में सर्वाधिक परती भूमि श्रीमाधोपुर तहसील में 20.00 प्रतिशत है वहीं न्यूनतम परती भूमि धोद तहसील में पाई जाती है। सीकर जिले में रेतीली भूमि का प्रतिशत 4.44 प्रतिशत है। सीकर जिले में सर्वाधिक रेतीली भूमि लक्ष्मणगढ़ तहसील में 10.00 प्रतिशत है। वहीं न्यूनतम रेतीली भूमि धोद तहसील में पाई जाती है।

सारणीं संख्या–49 : कृषि भूमि का उपयोगी प्रतिरूप

श्रेणी	तहसील								
	फतेहपुर	लक्ष्मणगढ़	सीकर	श्रीमाधोपुर	दाता रामगढ़	नीम का थाना	धोद	खण्डेला	रामगढ़
सिंचित भूमि	12	17	20	21	20	18	24	26	08
असिंचित भूमि	28	22	10	11	16	18	24	22	30
बारानी भूमि	02	03	08	08	04	04	02	00	03
परती भूमि	03	02	10	10	08	08	00	02	06
रेतीली भूमि	05	06	02	00	02	02	00	00	03
योग	50	50	50	50	50	50	50	50	50

ग्राफ संख्या :– 2 कृषि भूमि का उपयोगी प्रतिरूप

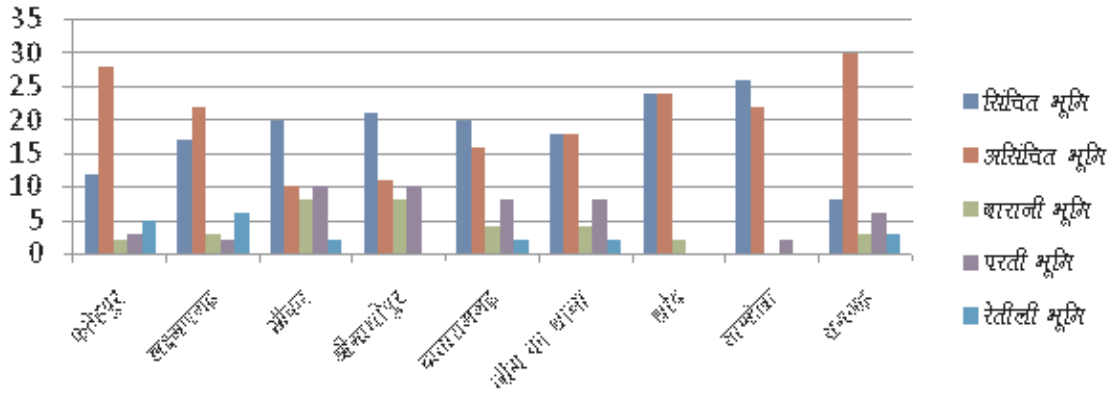

फसल प्रतिरूप :

फसल प्रतिरूप से अभिप्राय एक निश्चित अवधि के लिए बोई जाने वाली विभिन्न फसलों के बारे में वैकल्पिक निर्णय लेकर प्रत्येक फसल के बोए जाने वाले भू–क्षेत्र का निर्धारण करना है। इसी आधार पर तीन फसली प्रतिरूप पाये जाते हैं – (क) एक फसली प्रतिरूप (ख) द्वी–फसली प्रतिरूप एवं (ग) बहु फसली प्रतिरूप। सीकर जिले के सर्वेक्षित 18 गांवों का विवरण सारणीं संख्या 50 में दर्शाया गया है। सीकर जिले में एक फसली प्रतिरूप के अन्तर्गत पायी जाने वाली भूमि 25.77 प्रतिशत हैं सीकर जिले में एक फसली प्रतिरूप के अन्तर्गत सर्वाधिक भूमि फतेहपुर तहसील में 36.00 प्रतिशत हैं वहीं सीकर जिले में एक फसली प्रतिरूप के अन्तर्गत न्यूनतम भूमि लक्ष्मणगढ़ तहसील में 20.00 प्रतिशत हैं दूसरी तरफ सीकर जिले में द्वी–फसली प्रतिरूप के अन्तर्गत 54.88 प्रतिशत भूमि शामिल है। सीकर जिले में द्वि–फसली प्रतिरूप के अन्तर्गत सर्वाधिक भूमि सीकर तहसील के अन्तर्गत 60.00 प्रतिशत है। एवं इसके विपरीत सीकर जिले में द्वि–फसली प्रतिरूप के अन्तर्गत न्यूनतम भूमि फतेहपुर तहसील में 40.00 प्रतिशत हैं सीकर जिले में बहु–फसली प्रतिरूप भी काफी संख्या में पाया जाता है। सीकर जिले में बहु–फसली प्रतिरूप के अन्तर्गत 19.33 प्रतिशत भूमि शामिल है। सीकर जिले में सर्वाधिक बहु–फसली प्रतिरूप खण्डेला तहसील में 26.00 प्रतिशत है। वहीं बहु–फसली प्रतिरूप के अन्तर्गत न्यूनतम भूमि नीम का थाना तहसील में 12.00 प्रतिशत है। अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सीकर जिले में अधिकांशतः बहु–फसली प्रतिरूप को अपनाया जाता है। वहीं एक फसली प्रतिरूप अपनाने के पीछे सबसे बड़ा कारण वहां स्थित रेगिस्तानी भूमि एवं सिंचाई साधनों का अभाव है।

सारणीं संख्या–50 : फसल प्रतिरूप

तहसील	श्रेणी						
	एक फसली	प्रतिशत	द्वि फसली	प्रतिशत	बहु फसली	प्रतिशत	योग
फतेहपुर	18	36.00	20	40.00	12	24.00	50
लक्ष्मणगढ़	10	20.00	30	60.00	10	20.00	50
सीकर	12	24.00	30	60.00	08	16.00	50
श्रीमाधोपुर	10	20.00	28	56.00	12	24.00	50
दातारामगढ़	13	26.00	30	60.00	07	14.00	50
नीम का थाना	16	32.00	28	56.00	06	12.00	50
धोद	14	28.00	27	54.00	09	18.00	50
खण्डेला	10	20.00	27	54.00	13	26.00	50
रामगढ़	13	26.00	27	54.00	10	20.00	50

ग्राफ संख्या :– 3 फसल प्रतिरूप

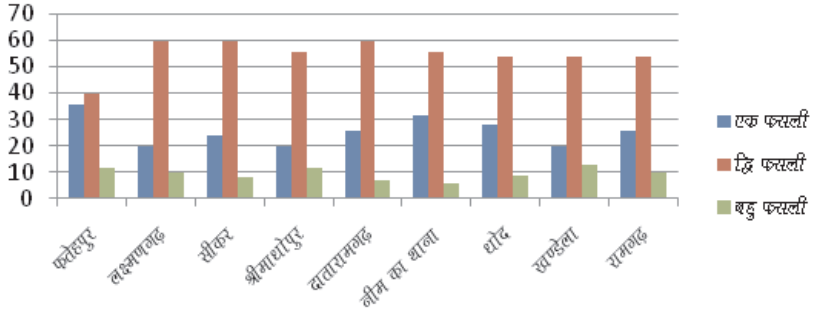

फसल के प्रकार :

किसी भी क्षेत्र विशेष में किस प्रकार की खेती की जाती है वहां की कृषि के आर्थिक हालात वहां की फसलों के प्रकार से इसकी जानकारी प्राप्त होती है। सीकर जिले के सर्वेक्षित 18 गांवों का विवरण सारणीं संख्या 51 में दर्शाया गया है। सीकर जिले में सर्वाधिक रबी की फसल का कुल प्रतिशत 25.77 प्रतिशत है। सीकर जिले में सर्वाधिक रबी की फसल सीकर तहसील में 40.00 प्रतिशत है वहीं सीकर जिले में न्यूनतम रबी की फसल धोद तहसील में 18.00 प्रतिशत है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सीकर जिले में रबी की फसल पर यहां की जनता का रूझान कम है। सीकर जिले में खरीफ की फसल का कुल प्रतिशत 62.66 है। सीकर जिले में सर्वाधिक खरीफ की फसल 76.00 प्रतिशत धोद तहसील में है। वहीं सीकर जिले में न्यूनतम खरीफ की फसल सीकर तहसील में 48.00 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट है कि सीकर जिले में खरीफ की फसल के प्रति लोगों का रूझान अधिक है। सीकर जिले में जायद की फसल का कुल प्रतिशत 3.33 प्रतिशत है। सीकर जिले में सर्वाधिक जायद की फसल फतेहपुर तहसील में 8.00 प्रतिशत है। वहीं सीकर जिले में न्यूनतम जायद की फसल धोद तहसील में पाई जाती है। अतः स्पष्ट है कि सीकर जिले में जायद फसलों पर लोगों का ध्यान न के बराबर है क्योंकि इनसे आर्थिक लाभ कम होता है। इन सबके अतिरिक्त अन्य फसलों में सीकर जिले का कुल प्रतिशत 8.22 प्रतिशत है। सीकर जिले में अन्य फसलों का सर्वाधिक प्रतिशत दाता रामगढ़ में 14.00 प्रतिशत है वहीं सीकर जिले में अन्य फसलों में न्यूनतम प्रतिशत फतेहपुर तहसील में 4.00 प्रतिशत पाया जाता है। अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सीकर जिले में खरीफ की फसल पर किसानों का ध्यान ज्यादा रहता है क्योंकि आज भी यहां पर किसानों का अधिक ध्यान जीविकोपार्जन कृषि पर रहता है।

सारणीं संख्या–51 : फसल के प्रकार

तहसील	श्रेणी (फसल प्रकार)								
	रबी	प्रतिशत	खरीफ	प्रतिशत	जायद	प्रतिशत	अन्य	प्रतिशत	योग
फतेहपुर	12	24.00	32	64.00	04	8.00	02	4.00	50
लक्ष्मणगढ़	17	34.00	30	60.00	01	2.00	02	4.00	50
सीकर	20	40.00	24	48.00	03	6.00	03	6.00	50
श्रीमाधोपुर	11	22.00	35	70.00	00	0.00	04	8.00	50
दातारामगढ़	13	26.00	30	60.00	00	0.00	07	14.00	50
नीम का थाना	14	28.00	30	60.00	02	4.00	04	8.00	50
धोद	09	18.00	38	76.00	00	0.00	03	6.00	50
खण्डेला	10	20.00	32	64.00	03	6.00	05	10.00	50
रामगढ़	10	20.00	31	62.00	02	4.00	07	14.00	50

स्त्रोत– फील्ड सर्वेक्षण

ग्राफ संख्या :– 4 फसल के प्रकार

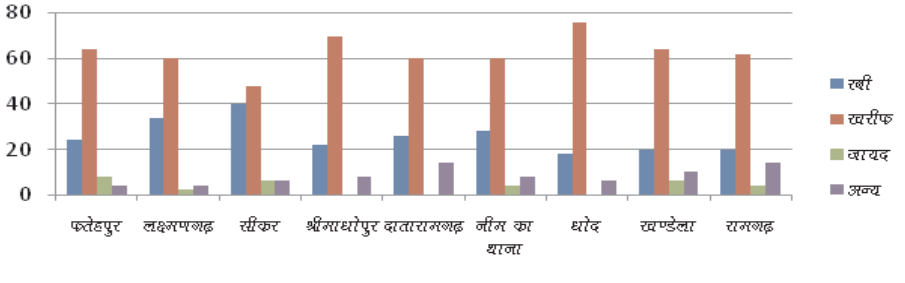

कृषि के दौरान सिंचाई के प्रकार :

सिंचाई करके मानव कृषि भूमि से वाणिज्यक एवं खाद्यान्न फसलें जीवन स्तर में अभिवृद्धि करने के लिए उत्पादित करता है। सामान्यतः वर्षा की अपर्याप्तता की दशा में फसल उत्पादन हेतु खेतों में कृत्रिम विधि से जल आपूर्ति करना सिंचाई कहलाता है। सीकर जिले में सर्वेक्षित 18 गावों का विवरण सारणीं संख्या 53 में दर्शाया गया है। सीकर जिले में नलकूप से सिंचाई का कुल प्रतिशत 28.00 प्रतिशत है। सीकर जिले में नलकूप से सिंचाई सर्वाधिक सीकर तहसील में 32.00 प्रतिशत तक है। वहीं सीकर जिले में न्यूनतम नलकूप सिंचाई नीम का थाना तहसील में 20.00 तक है। सीकर जिले में कुओं से कुल सिंचाई 71.55 प्रतिशत तक है। सीकर जिले में कुओं से सर्वाधिक सिंचाई नीम का थाना तहसील में 80.00 प्रतिशत तक है। सीकर जिले में कुओं से न्यूनतम सिंचाई श्रीमाधोपुर तहसील में 60.00 प्रतिशत तक है। सीकर जिले में नहरों का विकास अभी तक नहीं हुआ है। अन्य सिंचाई साधनों का कुल प्रतिशत 0.45 प्रतिशत तक है।

सारणीं संख्या–53 : कृषि के दौरान सिंचाई के प्रकार

तहसील	पानी की गहराई (मीटर में)								
	नलकूप	प्रतिशत	कुओं से	प्रतिशत	नहर	प्रतिशत	अन्य	प्रतिशत	योग
फतेहपुर	10	20.00	40	80.00	0	0.00	0	0.00	50
लक्ष्मणगढ़	12	24.00	38	76.00	0	0.00	0	0.00	50
सीकर	16	32.00	34	68.00	0	0.00	0	0.00	50
श्रीमाधोपुर	20	40.00	30	60.00	0	0.00	0	0.00	50
दातारामगढ़	16	32.00	34	68.00	0	000	0	0.00	50
नीम का थाना	10	20.00	40	80.00	0	0.00	0	0.00	50
धोद	12	24.00	38	76.00	0	0.00	0	0.00	50
खण्डेला	14	28.00	36	72.00	0	0.00	0	0.00	50
रामगढ़	16	32.00	32	64.00	0	0.00	2	4.00	50

स्त्रोत– फील्ड सर्वेक्षण

उत्पादन में ज्यादा प्रभावी खाद :

कृषि में खाद का काफी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। क्योंकि खाद से ही उत्पादन की मात्रा को बढ़ाया जा सकता है। सीकर जिले के सर्वेक्षित 18 गांवों का विवरण सारणीं संख्या 56 में दर्शाया गया है। सीकर जिले में कुल 32.00 प्रतिशत लोगों का मानना है कि रासायनिक खाद ज्यादा प्रभावी होती है। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति रामगढ़ तहसील में 44.00 प्रतिशत तक है। वहीं इसी श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति नीम का थाना तहसील में 24.00 प्रतिशत तक हैं। सीकर जिले में कुल 68.00 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि रासायनिक खाद ज्यादा प्रभावी नहीं होती है। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति नीम का थाना तहसील में 76.00 प्रतिशत तक है। वहीं इसी श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति रामगढ़ तहसील में 56.00 प्रतिशत तक है। सीकर जिले में कुल 82.22 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि कृषिगत उत्पादन में जैविक खाद ज्यादा प्रभावी है। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति धोद तहसील में 96.00 प्रतिशत तक है। इसी श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति श्रीमाधोपुर तहसील में 72.00 प्रतिशत तक है। सीकर जिले में कुल 17.77 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि जैविक खाद ज्यादा प्रभावी नहीं होती है। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति श्रीमाधोपुर तहसील में 28.00 प्रतिशत तक है। वहीं इस श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति धोद तहसील में 4.00 प्रतिशत तक हैं। सीकर जिले में कुल 68.44 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि कि अन्य खाद भी उत्पादन में ज्यादा प्रभावी होती हैं। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति रामगढ़ तहसील में 86.00 प्रतिशत तक है। वहीं इसी श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति लक्ष्मणगढ़ तहसील में 38.00 प्रतिशत तक है। सीकर जिले में कुल 31.55 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि अन्य खाद कृषिगत उत्पादन में ज्यादा प्रभावी नहीं है। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति लक्ष्मणगढ़ तहसील में 62.00 प्रतिशत तक हैं। वहीं इसी श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति रामगढ़ तहसील में 14.00 प्रतिशत तक है।

सारणीं संख्या–56 : उत्पादन में ज्यादा प्रभावी खाद

तहसील	खाद का प्रकार												
	रासायनिक		प्रतिशत		जैविक		प्रतिशत		अन्य		प्रतिशत		योग
	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	
फतेहपुर	12	38	24	76	42	8	84	16	20	30	40	60	50
लक्ष्मणगढ़	14	36	28	72	44	6	88	12	19	31	38	62	50
सीकर	15	35	30	70	41	9	82	18	32	18	64	36	50
श्रीमाधोपुर	19	31	38	62	36	14	72	28	40	10	80	20	50
दातारामगढ़	16	34	32	68	39	11	78	22	39	11	78	22	50
नीम का थाना	12	38	24	76	42	8	84	16	40	10	80	20	50
धोद	16	34	32	68	48	2	96	4	38	12	76	24	50
खण्डेला	18	32	36	64	41	9	82	18	37	13	74	26	50
रामगढ़	22	28	44	56	37	13	74	26	43	7	86	14	50

स्त्रोत– फील्ड सर्वेक्षण

रासायनिक खाद व कीटनाशक का मानव शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव :

वर्तमान समय में कृषि कार्य में रासायनिक खाद व कीटनाशक का उपयोग बढ़ता जा रहा है। क्योंकि इनके उपयोग से कृषि में उत्पादन को बढ़या जा सकता है। लेकिन साथ ही इनका प्रभाव मानव शरीर पर भी पड़ता है। सीकर जिले के सर्वेक्षित 18 गांवों का विवरण सारणीं संख्या 57 में दर्शाया गया है। सीकर जिले में कुल 75.55 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि रासायनिक खाद का मानव शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति फतेहपुर तहसील में 86.00 प्रतिशत तक है। वहीं इसी श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति नीम का थाना तहसील में 64.00 प्रतिशत तक हैं। सीकर जिले में कुल 10.00 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि रासायनिक खाद का मानव शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति श्रीमाधोपुर तहसील में 20.00 प्रतिशत तक है। वहीं इसी श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति फतेहपुर तहसील में 4.00 प्रतिशत तक है। सीकर जिले में कुल 14.44 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि रासायनिक खाद का शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव होता है या नहीं इसकी जानकारी नहीं रखते। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति नीम का थाना तहसील में 28.00 प्रतिशत तक हैं। वहीं इसी श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति फतेहपुर तहसील में 10.00 प्रतिशत तक है। सीकर जिले में कुल 64.00 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि कीटनाशक का शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति श्रीमाधोपुर तहसील में 82.00 प्रतिशत तक हैं। वहीं इसी श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति सीकर तहसील में 48.00 प्रतिशत तक है। सीकर जिले में कुल 13.55 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि कीटनाशक का मानव शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति सीकर तहसील में 20.00 प्रतिशत तक हैं। वहीं इस श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति दातारामगढ़ तहसील में 4.00 प्रतिशत तक हैं। सीकर जिले में कुल 22.44 प्रतिशत व्यक्तियों का मानना है कि कीटनाशक का शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है या नहीं इसकी जानकारी नहीं रखते हैं। इस श्रेणी में सर्वाधिक व्यक्ति धोद तहसील में 34.00 प्रतिशत तक है। वहीं इसी श्रेणी में न्यूनतम व्यक्ति श्रीमाधोपुर तहसील में 12.00 प्रतिशत तक है।

सारणीं संख्या–57 : रासायनिक खाद व कीटनाशक का मानव शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव

तहसील	प्रभाव (श्रेणी)												योग
	रासायनिक खाद			प्रतिशत			रासायनिक खाद			प्रतिशत			
	हां	नहीं	पता नहीं	हां	नहीं	पता नहीं	हां	नहीं	पता नहीं	हां	नही	पता नहीं	
फतेहपुर	43	02	05	86	04	10	32	10	08	64	20	16	50
लक्ष्मणगढ़	39	05	06	78	10	12	30	08	12	60	16	24	50
सीकर	40	03	07	80	06	14	24	10	16	48	20	32	50
श्रीमाधोपुर	35	10	05	70	20	10	41	03	06	82	06	12	50
दातारामगढ़	38	04	08	76	08	16	40	02	08	80	04	16	50
नीम का थाना	32	04	16	64	08	32	32	10	08	64	20	16	50
धोद	40	03	07	80	06	14	30	03	17	60	06	34	50
खण्डेला	32	10	08	64	20	16	28	10	12	56	20	24	50
रामगढ़	41	04	05	82	08	10	31	05	14	62	10	28	50

सीकर जिले में कृषि विकास में आने वाली समस्याएं:–

1. अध्ययन क्षेत्र में भूमि का ढाल समान न होने के कारण खेतों की जुताई व आधुनिक यंत्रो के प्रयोग में बधा आती है।
2. सीकर जिले में तापमान की विकशमता के चलते फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़तार है।
3. सीकर जिले में भूमि रेतीली होने के कारण कृषि कार्यो के दौरान जल की अधिक मात्रा की आवश्यकता पड़ती है।
4. सीकर जिले का सागर से दूर होने के कारण वषर्ज्ञ का औसत काफी कम रहता है जिसका सीधा प्रीाव कृषि पर पड़ता है।
5. सीकर जिले में धरातलीय जल कम होने के कारण भूमिगत जली का प्रयोग किया जाता है जो काफी लवणीय है।
6. सीकर जिले में भूमि की उत्पादक क्षमता कम है इस कारण प्रति हैक्टेयर उत्पादन कम होता है।
7. सीकर जिले में खेतों में बार बार एक ही फसल को बोने से कीटों का भ्य बढ रहा है।
8. यहां नाईट्रोजन वाली खाद के अधिक व अनुचित उपयोग के कारण पौधों के आस–पास होने वाले कीटों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।
9. सीकर जिले में उत्पादन में वृद्धि करने हेतु रासायनिक उर्वरक के अत्यधिक प्रयोग के कारण भूमि की प्राकृतिक उर्वरा शक्ति नष्ट होती जा रही है एवं भूमि के लगातार उपयोग के कारण उपजाउ तत्वों की कमी होती जा रही है।
10. सीकर जिले में भूमि पर लगातार कीटनाशक खरपतवार नाशक दवाईयों के प्रयोग से भूमि की उत्पादकता नष्ट होती जा रही है।
11. सीकर जिले में प्रति हैक्टेयर में उत्पादन में कमी प्रमुख समस्या है।
12. सीकर जिले में भण्डारण की पूर्ण व्यवस्था न होने के कारण फसल खराब होने के भय से किसानों को कम दामों पर फसल बेचना पड़ रहा है।
13. सीकर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों को कृषि सम्बंधी ज्ञान के अभाव में कम गुणवत्ता वाले कीट व कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग करना पड़ रहा है।

सीकर जिले में कृषि विकास के स्तर को सही दिशा में लाने हेतु निम्न सुझाव कारगर सिद्ध हो सकते है –

1.कुल कृषि एवं फसल सघनता का बढाकर कृषि उत्पादन एवं कृषि विकास को बढाया जा सकता है।
2.फसलों की उन्नत किस्मों के तहत कृषि को बढाया जाना चाहिए।
3.कृषि फसलों में ऐसी किस्मों का चुनाव किया जाये जो कम पानी और कम समय में अधिक उत्पादन दे सके।
4.कृषि भूमि में कोई भी फसल बोने से पहले यदि हरि खाद का प्रयोग किया जाए तो अन्य खाद व पानी की आवश्यकता कम हो जायेगी।
5.कृषि भूमि को समतल पर ही खेती की जानी चाहिए ताकि कम पानी से अधिक पैदावार ली जा सके।
6.खेतों में सिंचाई के लिए पाईपों व नालियों का प्रयोग किया जाए ताकि कम समय में अधिक क्षेत्र पर सिंचाई की जा सके।
7.अधिक वर्षा के दिनों में आवश्यकता से अधिक पानी को भूमि में नीचे उतारने का प्रबन्ध करना चाहिए ताकि भूमि गत जल स्तर को बढाया जा सके।
8.कृषि से पहले समय–समय पर मिट्टी जी जांच करवानी चाहिए ताकि कम होते पोषक तत्वों की पूर्ति की जा सके।
9.उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग कर क्षेत्र में कृषि विकास के स्तर को बढाया जा सकता है।
10.कृषि क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की जैविक खादों का प्रयोग करके कृषि के स्तर को उंचा उठाया जा सकता है।
11.वर्तमान में विकसिक कृषि के आधुनिक यंत्रों का प्रयोग करके कृषि विकास के स्तर में वृद्धि की जा सकती है।
12.मंहगे कृषि यंत्र विभिन्न सहकारी समितियों के माध्यम से छोटे किसानों को सस्ती दरों पर सरकार द्वारा उपलब्ध करवाए जाने चाहिए।
13.कृषि ऋण सस्ती दरों पर सरकार द्वारा उपलब्ध करवाया जाना चाहिए जिससे छोटे किसानों को फायदा मिल सके।
14.सरकार द्वारा सभी फसलों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित किया जाना चाहिए ताकि अधिक उत्पादन पर आर्थिक हानि न हो।
15.कृषि कार्य के दौरान उचित फसल चक अपनाकर उत्पादन मैं निरन्तर वृद्धि की जा सकती है।
16.कृषि क्षेत्र में सौर उर्जा आधारित तकनीक उपनाकर सिंचाई सुविधा को विकसित की जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल एम.डी. एवं ओ.पी. गुप्ता, (2000) : भारत में आर्थिक पर्यावरण, रमेश बुक डिपो, जयपुर
2. अनिता एच.एस. (2002) : एग्रीकल्चरल मार्केटिंग, मंगलदीप पब्लिकेशन्स, जयपुर
3. गुर्जर, आर.एस (2000) : ''एग्रीकल्चर इकोलॉजी ऑफ शेखावाटी'' पी.एच.डी. थीसिस
4. राव, वाई.वी.कृष्णा (2000) : न्यू चेलेन्जेज फसीना इंडियन एग्रीकल्चर, विश्लेन्द्र पब्लिसिंग हाऊस, एबीड्स, हैदराबाद
5. शफी, एम. (2006) : एग्रीकल्चरल ज्योग्राफी, पियरसन ऐज्यूकेशन, नई दिल्ली रिर्पोट/अन्य प्रकाशन इत्यादि
6. शक्तावत, मोहनसिंह एवं अभय कुमार व्यास (2000) : वैज्ञानिक फसल प्रबन्धन, यश पब्लिसिंग हाऊस, बीकानेर (राजस्थान)
7. तिवारी आर.सी. एवं सिंह बी.एन. (2000) : कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहबाद
8. गोवडा, एन.के. (2001) : एग्रीकल्चर डवल्पमेंट, युटीलिटी बुक्स

Reports/Peroodicals

1. सीकर जिले की जनगणना रूपरेखा (2011) : जनगणना विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली
2. सीकर जिले का गजेटियर (ळंमजजमत) (1977) : गजेटियर निर्देशालय, राजस्थान जयपुर
3. सीकर जिले की सांख्यिकीय रूपरेखा (2014) : आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय, राजस्थान, जयपुर

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com